Class- B.A(Hons)SANSKRIT GE 2nd sem

Subject- Nationalism and Indian literature

Topic- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनाओं में चित्रित राष्ट्रीयता का वर्णन।

पिछली कक्षाओं में हमने राष्ट्र शब्द को परिभाषित करते हुए राष्ट्र के स्वरूप, विधायक तत्व का विस्तृत वर्णन किया। इसके बाद राष्ट्रीयता को परिभाषित करते हुये उसके तत्त्वों को भी पढ़ा। तत्पश्चात् भारत को राष्ट्र के रूप में पढ़ा साथ भारतीय राष्ट्रीयता की विशेषताओं को भी वर्णित किया। इसी प्रकार संस्कृत साहित्य मुख्य रूप से राष्ट्रीयता कहाँ वर्णित है उस पर भी प्रकाश डाला। इसी संदर्भ में शुक्ल यजुर्वेद, अथर्ववेद, वाल्मीकीय रामायण, विष्णु पुराण तथा रघुवंश महाकाव्य में भी राष्ट्रीयता का वर्णन किया। इसके बाद आधुनिक संस्कृत साहित्य में भी जिन स्थानों पर राष्ट्रीयता का वर्णन है उस पर भी परीक्षा की दृष्टी से चर्चा की, जैसे- अम्बिकादत्त व्यास, पण्डिता क्षमाराव, मथुराप्रसाद दीक्षित, चारुदेव शास्त्री और त्रयम्बक शर्मा आदि। अतः अब हमारा विषय हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता किस रूप में और किन स्थानों में वर्णित है उसको पढ़ा जायेगा।

हिन्दी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीयता-

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनायें-भारत जननी और भारत दुर्दशा।

2. रामधारी सिंह दिनकर की रचनायें-प्रणति, हिमालय, मेरे प्यारे देश, मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा।

3. जयशंकर प्रसाद की रचनायें-मधुमय देश हमारा और हमारा प्यारा भारतवर्ष आदि।

4. मैथिलीशरण गुप्त की रचनायें- मातृभूमि, भूमि भाग्य-सा भारतवर्ष, भारतभारती आदि।

5. माखन लाल चतुर्वेदी की रचनायें- पुष्प की अभिलाषा, वीरव्रती आदि।

6. सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनायें- झांसी की रानी और विदा आदि।

इस प्रकार इन सभी हिन्दी साहित्यकार की रचनाओं में राष्ट्रीयता को समझना है। सर्वप्रथम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का व्यक्तिव एवं कृतित्व से संक्षिप्त रूप में परिचित होंगे इसके बाद इनकी रचनाओं की विषय-वस्तु पर चर्चा करेंगे।

श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र(सन् 1850ई.- 1885ई.) आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक माने जाते हैं। इनका जन्म काशी में हुआ था। अल्पायु में ही कविता-लेखन प्रारंभ कर दिया था। बंगला साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों से परिचित होने के बाद 'कविवचन सुधा' नामक कविता का प्रकाशन किया। इन्होंने एक विशाल साहित्य की रचना की है जिसमें बीस नाटक, आठ उपन्यास और सत्ताइस ऐतिहासिक रचनाएँ हैं। इनकी रचनाओं में भाक्तिभावना, सौन्दर्य एव प्रेम, देशभक्ति और राष्ट्रीय भावना तथा हास्य-व्यंग्य देखने को मिलता है जैसे- भक्तसरोवर, प्रेमसरोवर, सत्य हरिश्चन्द्र, भारत-दुर्दशा और अंधेनगरी इत्यादि।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सन् 1877 ई. में **'भारतजननी'** नामक नाटक की रचना की। इस रचना के माध्यम से भारत जननी की दीन हीन स्थिति और विवशताओं से अवगत कराकर पाठक और दर्शक में देशोत्थान और राष्ट्रप्रेम की भावनाएँ उद्दीप्त करने का प्रयास किया है। सन् 1880 ई. में **'भारतदुर्दशा'** नामक राष्ट्रीय नाटक प्रकाशित किया। इस नाटक में देश की निम्नतम स्थिति और दुर्दशा को प्रस्तुत कर भारतीयों को देश के लिये सचेत और जागरूक रहने का सन्देश दिया है।

भारतेन्दु के युग में देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता की भावना बहुत स्पष्ट नहीं थी। कवि देश की दुर्दशा से बहुत अधिक खिन्न हुये जिसके कारण उनके अन्दर राष्ट्रीय चेतनाओं का उद्भव हुआ। भारत की दुर्दशा को देखकर जो खिन्नता हुयी उसी के फलस्वरुप इन्होंने देशप्रेम संबंधी रचनाओं का निर्माण किया। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में देशप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। अपनी रचनाओं में भारत के अतीत के प्रति गर्व करते हुये उन्होंने कहा है कि-

'भारत के भुजबल जग रक्षित।

भारत विद्यालहि जग सिच्छित॥'

अर्थात् भारत ने अनेक देशों को शिक्षित किया है, ज्ञान दिया है। उसने जगत् की रक्षा की है। सबसे पहले ज्ञान की किरण यहीं आई। कहने का तात्पर्य यह है कि इस भारत भूमि में ही प्राचीन भारतीय साहित्य में सभी विद्याओं का मूल प्राप्त होता है। प्राचीन भारत के वीर राजाओं का स्मरण भी किया गया क्योंकि इन वीर राजाओं ने भारत की उन्नति के लिये अपना सम्पूर्ण योगदान दिया है। भारत के वीर क्षत्रियों को धन्य कहते हुए कहा है कि-

'धन धन भारत के सब छत्री

जिनकी सुजस धुजा फहराए।'

एक ओर जब भारत के प्रति गर्व दिखाया है तो वहीं दूसरी ओर भारत की दशा के वर्णन में उनकी व्याकुलता देखने को मिलती है-

'रोवहु सब मिलि के आवहु भारत भाई।

हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥'

कहने का तात्पर्य यह है कि सभी भारतवासी पिड़ित हैं, व्याकुल हैं। हाय धिक्कार है हमें, भारत की ऐसी दुर्दशा देखी नहीं जाती। राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों के कारण भारत की इस दुर्दशा से मुक्त होने का कोई उपाय नही मिल रहा है-

'सोई भारत की आज यह, भई दुरदसा हाय।

कहा करै कित जायँ नहिं सूझत कछू उपाय।'

अर्थात् हाय भारत की यह दुर्दशा, क्या करें, कहाँ जायें, कोई भी उपाय नहीं मिल रहा है। भारतेन्दु ने भारतदुर्दशा नामक रचना में भारत को दुर्बल बनाने वाली धार्मिक और समाजिक रुढ़ियों एवं परम्पराओं को वर्णन किया है। यहाँ पर राष्ट्रवासियों की एकता पर बल देते हुये राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दुर्दशा पर अपनी पीड़ा व्यक्त की है-

'कुछ तो वेतन में गयो कछुक राजकर मांही।

बाकी सब व्यवहार में गयो, रह्यो कछु नांही॥'

भारतेन्दु ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों, बुराइयों एवं कुरीतियों पर अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यंग्य किया है। इन्होंने दुर्दशा और पराधीनता की दुःखमयी स्थिति के अंकन के द्वारा लोगों में स्वन्त्रता की चेतना जगाने का प्रयास किया है।

भारत दुर्दशा link for information

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4_%E0%A4%A6%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A4%B6%E0%A4%BE

Class- B.A(Hons)SANSKRIT GE 2nd sem

Subject- Nationalism and Indian literature

Topic- रामधारी सिंह दिनकर की रचनाओं में चित्रित राष्ट्रीयता का वर्णन ।

हिन्दी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीयता-

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनायें-भारत जननी और भारत दुर्दशा ।

2. रामधारी सिंह दिनकर की रचनायें-प्रणति, हिमालय, मेरे प्यारे देश, मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा ।

3. जयशंकर प्रसाद की रचनायें-मधुमय देश हमारा और हमारा प्यारा भारतवर्ष आदि ।

4. मैथिलीशरण गुप्त की रचनायें- मातृभूमि, भूमि भाग्य-सा भारतवर्ष, भारतभारती आदि ।

5. माखन लाल चतुर्वेदी की रचनायें- पुष्प की अभिलाषा, वीरव्रती आदि ।

6. सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनायें- झांसी की रानी और विदा आदि ।

आज का विषय रामधारी सिंह दिनकर की रचनाओं में चित्रित राष्ट्रीयता का वर्णन है । रामधारी सिंह(सन् 1908ई.- 1974ई.) राष्ट्रीय विचारधारा के पोषक और सामाजिक चेतना के गायक कवि के रूप में स्मरण किये जाते है । इनका जन्म बिहार राज्य के मुंगेर गाँव में हुआ था । शिक्षा पूर्ण होने के बाद बिहार विश्वविद्यालय में प्राध्यापक, भागलपुर विश्वविद्यालय में उपकुलपति और राज्यसभा में मनोनीत सदस्य के रूप में कार्य किया । भारत सरकार के 'पद्मविभूषण' से विभूषित दिनकर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से भी सम्मानित हैं ।

इनकी गद्य-पद्यमयी अनेक रचनाएँ हैं, जैसे- रेणुका, हुंकार, द्वन्द्वगीत, बापू, रश्मिलोक, मिट्टी की ओर, अर्द्धनारीश्वर एवं उजली आग इत्यादि। कवि के काव्य की मूल चेतना राष्ट्रवादी है। अपने काव्य के माध्यम से जीवन के विभिन्न पक्षों को अभिव्यक्त किया है। इनके काव्य में कहीं जनजागरण की पुकार, कहीं राष्ट्रीयता का प्रखर स्वर है तो कहीं छायावादी प्रवृत्तियों के प्रति लगाव है।

राष्ट्रीयता और देशप्रेम से भरी हुई इनकी सुप्रसिद्ध कविता 'हिमालय' में भारत के गौरवमय अतीत का चित्रण है। इसमें भारत को पुण्यभूमि कहा गया है, और हिमालय को भारतभूमि का हिम रूपी मुकुट एवं भारत का दिव्य भाल कहा गया है यथा- **मेरी जननी के हिम-किरीट, मेरे भारत के दिव्य भाल! मेरे नगपति! मेरे विशाल!**।

'मेरे प्यारे देश' नामक कविता में उन्होंने देश को बड़े ही स्नेह से महिमामण्डित करते हुए नमन किया है-

'मानवता के इस ललाट-चन्दन को नमन करुँ मैं?

किसको नमन करुँ मैं भारत! किसको नमन करुँ मैं?'

भारत में प्रत्येक वस्तु नमन के योग्य है इसलिये कवि का प्रश्न है कि किसको नमन करुँ मैं? अर्थात् सभी को नमन करूँ मैं। इस भारत भूमि में कई नदियाँ, पर्वत तथा वनादि हैं।तो कवि ने यहाँ प्रश्न किया है कि हे मेरे प्यारे देश! किस किस को नमन करूँ मैं? जैसे-

'तुझको या तेरे नदीश, गिरि, वन को नमन करूँ मैं?

मेरे प्यारे देश्! देग या मन को नमन करूँ मैं?'

अतः इसी प्रकार **'मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा'** नामक कविता में भारतेन्दु का देश के प्रति प्रेम दृष्टिगत होता है। भारतीय तिरंगा को लेकर इनकी यह रचना है। कवि ने तिरंगे की शान कभी कम ना हो इस प्रकार से कामना की है तथा आवश्यकता पड़ने पर इस तिरंगे के लिये सबकुछ न्यौछावर कर देने वाली प्रेरणा का विस्तार किया है-

'इस पर न्यौछावर तन-मन है

न्यौछावर जीवन यौवन है

यह सारे भारत का प्रण है,

न्यौछावर सर्वस्व हमारा ।

झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥'

हिमालय-link for more information

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%AF_/_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%80_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%B9_%22%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A4%95%E0%A4%B0%22

Class- B.A(Hons)SANSKRIT GE 2nd sem

Subject- Nationalism and Indian literature

Topic- जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में चित्रित राष्ट्रीयता का वर्णन ।

हिन्दी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीयता-

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनायें-भारत जननी और भारत दुर्दशा ।

2. रामधारी सिंह दिनकर की रचनायें-प्रणति, हिमालय, मेरे प्यारे देश, मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा ।

3. जयशंकर प्रसाद की रचनायें-मधुमय देश हमारा और हमारा प्यारा भारतवर्ष आदि ।

4. मैथिलीशरण गुप्त की रचनायें- मातृभूमि, भूमि भाग्य-सा भारतवर्ष, भारतभारती आदि ।

5. माखन लाल चतुर्वेदी की रचनायें- पुष्प की अभिलाषा, वीरव्रती आदि ।

6. सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनायें- झांसी की रानी और विदा आदि ।

जयशंकर प्रसाद(सन् 1889ई.-1937ई.) का जन्म काशी के एक प्रतिष्ठित 'सुँघनी साहू' परिवार में हुआ था । इन्हें संस्कृत, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी की अच्छी शिक्षा प्राप्त की और साहित्य और दर्शन का अध्ययन किया । इनकी रचनाओं में कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास और निबन्ध हैं । प्रसाद जी छायावादी युग के कवि हैं । प्रकृति, सौन्दर्य, प्रेम, व्यथा, करुणा, आशा आदि की भावमयी व्यञ्जना इनकी काव्यरचना की विशिष्टता है, साथ ही मानवतावादी राष्ट्रीय चेतना के विकसित रूप के दर्शन भी होते हैं । प्रसाद जी की 'भारत गीत', मधुमय देश हमारा आदि रचनाओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम और राष्ट्रीय स्वाभिमान की वाणी है । 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता में कवि ने राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर ही भारत की दुर्दशा का चित्र अंकित किया है-

'कालिमा बिखरती है संध्या के कलंक सी,

दुंदुभी-मृदंग-तूर्य शान्त, स्तब्ध, मौन हैं।'

प्रसाद ने विदेशी बाला कार्नेलिया के मुख से भारत के गौरव और शोभा का बड़ा सजीव वर्णन चन्द्रगुप्त नाटक में प्रस्तुत करवाया है। उसका द्वारा गया गीत **'अरुण यह मधुमय देश हमारा'** देश के प्रति उसके असीम अनुराग और स्नेह को प्रकत करता है। कार्नेलिया भारतवर्ष से अपनी जन्मभूमि के समान प्रेम करती है। भारत की महत्ता से अभिभूत होकर वह चन्द्रगुप्त से कहती है, **'मुझे इस देश से, जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है।....अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि हैं, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है।'** इसी सन्दर्भ में सिकन्दर ने भी कहा है, **'धन्य हैं आप्, मैंतलवार खींचे हुए भारत में आया-हृदय देकर जाता हूँ।'**

राष्ट्र के प्रति प्रेम दिखाते हुये भारत देश को विश्वसंस्कृति का जन्मस्थल बताते है और लिखते हैं कि- **'सभ्यता और संस्कृति के सम्बन्ध में भारत को विश्वजननी का गौरव प्राप्त हो रहा है। वह प्रेम, सभ्यता, विद्या, विभव का गृह रहा है। सबसे पहले संस्कृति का जन्म भारत में हुआ है।'**

प्रसाद जी ने भारत को मधुमय देश कहा है। इस भारतभूमि ने सभी को आश्रय दिया है। यहां प्रत्येक कण-कण में भारतीय सुन्दरता, सहजता, सरलता तथा शान्ति का भाव देखने को मिलता है। प्रसाद जी ने इस विषय में कहा है कि- **'जहाँ पहुँच अन्जान क्श्इतिज को मिलता एक सहारा,....छिटका जीवन-हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा,...उड़ते खग जिस ओर मुंह किए समझ नीड़ निज प्यारा....अरुण यह मधुमय देश हमारा।'**

भारत के स्वरूप को और अधिक स्पष्ट करने के लिये प्रसाद जी की एक अन्य प्रसिद्ध रचना **'हमारा प्यारा भारतवर्ष'** है। जहां पर **सप्त स्वर सप्त सिंधु,...दधिचि का वह त्याग,...सिंधु-सा विस्तृत और अथाह एक निर्वासित का उत्साह...हमारा प्यारा भारतवर्ष।**

मधुमय देश हमारा- link for more information

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%85%E0%A4%B0%E0%A5%81%E0%A4%A3_%E0%A4%AF%E0%A4%B9_%E0%A4%AE%E0%A4%A7%E0%A

5%81%E0%A4%AE%E0%A4%AF_%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6_%E0%A4%B9%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%BE_/_%E0%A4%9C%E0%A4%AF%E0%A4%B6%E0%A4%82%E0%A4%95%E0%A4%B0_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%A6

Class- B.A(Hons)SANSKRIT GE 2nd sem

Subject- Nationalism and Indian literature

Topic- मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में चित्रित राष्ट्रीयता का वर्णन ।

हिन्दी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीयता-

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचनायें-भारत जननी और भारत दुर्दशा ।

2. रामधारी सिंह दिनकर की रचनायें-प्रणति, हिमालय, मेरे प्यारे देश, मंगल मूर्ति तिरंगा प्यारा ।

3. जयशंकर प्रसाद की रचनायें-मधुमय देश हमारा और हमारा प्यारा भारतवर्ष आदि ।

4. मैथिलीशरण गुप्त की रचनायें- मातृभूमि, भूमि भाग्य-सा भारतवर्ष, भारतभारती आदि ।

राष्ट्रीय भावनाओं को काव्य में मुखरित करने वाले आधुनिक हिन्दी- कवियों में श्री मैथिलीशरण गुप्त(सन्1886ई.- 1964ई.) सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं । इनका जन्म झांसी के चिरगाँव में हुआ था इनका लालनपालन ऐसे वातारण में हुआ जिससे इनमें बचपन से ही साहित्य में अभिरुचि, राष्ट्रीय ब्आवना, रामभक्ति और भारतीय संस्कृति में आस्था उत्पन्न हुई । इन्हें हिन्दी, संस्कृत, बंगला, मराठी और अंग्रेजी भाषा का अभ्यास था जिसके कारण इन्होंने अल्पायु से ही कविताएँ लिखना प्रारम्भ किया । सन् 1909 में 'रंग में भंग' प्रथम काव्य प्रकाशित हुआ ।

मैथिलीशरण गुप्त के जीवन में राष्ट्रीयता के भाव कूट-कूट कर भर गए थे। इसी कारण उनकी सभी रचनाएं राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत है। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त थे। गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता है। इसमें भारत के गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता का ओजपूर्ण प्रतिपादन है।

मैथिली शरण गुप्त ने परतन्त्र भारत की दुर्दशा को देहा था साथ ही उसको समाप्त करने का सुनहरा सपना भी सजाया था । सन् 1912ई. में **'भारतभारती'** लिखकर देशवासियों का ध्यान वर्तमान दुर्दशा की ओर खींचा और अतीत की गौरवमयी झांकी प्रस्तुत करके उन्हें पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त होने के लिये प्रोत्दाहित किया । इस कृति से भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना जगाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई-

'हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी,

आओं विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी ।'

'भारतभारती' तो अपने समय में राष्ट्रीय जागरण का जैसे शंखनाद ही बन गयी थी-

'सुख और दुःख में एक-सा सब भाइयों का भाग हो,

अन्तःकरण में गूँजता राष्ट्रीयता का राग हो ।'

गुप्त जी का यह अपार देशप्रेम ही राष्ट्रीयता का आधार है । मातृभूमि के कण-कण के प्रति सहज अनुराग इनके राष्ट्रीय गीतों की शक्ति है । सन् 1910 ई. के आसपास लिखी गयी 'मातृभूमि' नामक उनकी कविता अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है, जिसमें मातृभूमि का स्तवन करते हुये भारतभूमि की सुषमा को विश्व न्जर में अनुपम बताया गया है । इसी प्रकार की सन् 1921 ई. में लिखी गयी लोकप्रिय रचना है- **'भूमि भाग्य-सा भारतवर्ष',** जिसमें कवि ने भारतभूमि को हरि का क्रीड़ा-क्षेत्र बताते हुये उसकी महिमा गायी है ।

सन् 1936ई. में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने मैथिलीशरण गुप्त को **'राष्ट्रकवि'** की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया था । आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय कवि तो कई हैं, पर 'राष्ट्रकवि' के रूप में अपनी पहचान बनाने वाला नाम एक ही है- **मैथिलीशरण गुप्त** ।

भारत भारती कविता-Link for more information.

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80_(%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4%E0%A4%BF)

मातृभूमि कविता- Link for more information

http://kavitakosh.org/kk/%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A5%83%E0%A4%AD%E0%A5%82%E0%A4%AE%E0%A4%BF_/_%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%A5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%80%E0%A4%B6%E0%A4%B0%E0%A4%A3_%E0%A4%97%E0%A5%81%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%A4

Rekha Kumari

Department of Sanskrit